पाठ - 29 निबंध कैसे लिखें

मुख्य विषय

निबंध को लेखन का एक ऐसा रूप कहा जा सकता है, जिसमें भावों या विचारों को क्रमानुसार और शृंखलाबद्ध रूप से व्यक्त किया जाता है। इसकी भाषा विषय के अनुरूप रखी जाती है जिसमें कसावट तथा प्रभाव का होना आवश्यक है। निबंध लेखन से पूर्व विभिन्न स्रोतों से सामग्री का चुनाव किया जाता है। संकलित सामग्री को विषय के अनुरूप एक खाके में रखना ही रूपरेखा कहलाती है। ये दो प्रकार की होती हैं-विस्तृत और संक्षिप्त रूपरेखा। इस पाठ में निबंध के गुण, निबंध के अंग, निबंध की रूपरेखा, विषय-सामग्री का चुनाव, निबंध के प्रकार आदि का वर्णन किया गया है।

मुख्य बिंदु

- निबंध शब्द 'नि' और 'बंध' से बना है, जिसका अर्थ है-अच्छी तरह से बँधा हुआ। निबंध में व्यक्त किए गए भाव या विचार एक-दूसरे से श्रृंखलाबद्ध होते हैं। इसकी भाषा विषय के अनुकूल होती है। इसके माध्यम से नपे-तुले शब्दों में अधिक-से-अधिक बातें कही जाती हैं।

  अर्थात् निबंध की शक्ति है-अच्छी भाषा। भाषा के अच्छे प्रयोग द्वारा ही भावों, विचारों और अनुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

- **निबंध के गुण** :

  1. लिखित आत्माभिव्यक्ति की शक्ति का विकास करता है, जिसे स्वतंत्र रचना-शक्ति या सृजन-शक्ति भी कहते हैं।
  2. भाषा के शुद्ध परिमार्जित और प्रभावशाली प्रयोग की क्षमता का विकास करता है।
  3. किसी दिए गए विषय पर स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में विचारों को लिपिबद्ध करने के कौशल का विकास करता है।
  4. विषय को एकसूत्रता में पिरोने का कौशल विकसित करता है।
  5. भाषा और शैली में निखार लाता है।

- **निबंध के अंग :**

  1. प्रस्तावना: निबंध के प्रारंभ में उसकी प्रस्तावना या भूमिका लिखी जाती है। निबंध की प्रस्तावना रोचक तथा विषय-वस्तु को स्पष्ट करने वाली होनी चाहिए। इसके द्वारा पाठक के मन में निबंध को विस्तारपूर्वक पढ़ने की उत्सुकता जाग उठती है। प्रस्तावना संक्षिप्त किंतु प्रभावशाली होनी चाहिए। निबंध का पहला अनुच्छेद ही उसकी प्रस्तावना या भूमिका होता है।
  2. मुख्य अंश : यहाँ विषय-वस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है। निबंध से संबंधित सामग्री को चार-पाँच छोटे-बड़े अनुच्छेदों में इस प्रकार व्यक्त किया जाता है ताकि उसके सभी पहलुओं पर प्रकाश पड़ सके।

     मुख्य घटना, भाव या विचार प्रस्तुत करते समय उसके क्रम का ध्यान रखना आवश्यक है, साथ ही विचार तर्कसंगत हों और भाषा प्रभावशाली। विषय की पुष्टि के लिए जो भी उद्धरण, दृष्टांत या प्रमाण चुने जाएँ, वे सरल, आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक हों। जहाँ तक संभव हो, वे पाठक के दैनिक जीवन के अनुभवों से संबंधित हों। प्रत्येक मुख्य विचार के लिए एक

अनुच्छेद बनाया जाए। सभी अनुच्छेद आपस में संबद्ध हों कि विचार एक-दूसरे से जुड़े रहें।

निबंध लेखन में अच्छी भाषा-शैली का बड़ा महत्त्व है। यदि भाषा विषय के अनुरूप हो तथा शुद्ध, सरल, स्पष्ट, कसी हुई तथा प्रभावशाली हो तो पाठक निबंध को पढ़कर प्रभावित होगा। निबंध लेखन के समय सामान्यतः समास शैली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

3. उपसंहार : निबंध का अंतिम भाग उपसंहार कहलाता है। यहाँ विषय-वस्तु के विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। कभी-कभी लेखक अपना विचार या प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता है। निबंध का अंत ऐसा होना चाहिए कि उसका स्थायी प्रभाव पाठक पर पड़ सके। प्रस्तावना की भाँति उपसंहार भी एक ही अनुच्छेद का होता है।

- **निबंध की रूपरेखा** : निबंध की रूपरेखा प्रायः दो प्रकार से बनाई जा सकती है-विस्तृत तथा संक्षिप्त। यदि रूपरेखा में प्रत्येक बिंदु के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण तथ्य, घटना, विचार तथा उद्धरण आदि लिखते हैं तो वह विस्तृत रूपरेखा कहलाती है। जहाँ केवल मुख्य बिंदुओं को ही लिख दिया जाए, उसे संक्षिप्त रूपरेखा कहते हैं।
- **निबंध के प्रकार :**

1. वर्णनात्मक निबंध - किसी त्योहार, जैसे - होली, दीवाली, ईद या क्रिसमस; यात्रा, दृश्य, स्थान या घटना, गणतंत्र दिवस आदि पर लिखे गए निबंध प्रायः वर्णनात्मक निबंध कहलाते हैं। इनमें वर्णन या विवरण की प्रधानता होती है।
2. विचारात्मक निबंध - इसके अंतर्गत साहस, उत्साह, श्रद्धा, घृणा जैसे मनोवैज्ञानिक; अछूतोद्धार, विधवा-विवाह जैसे सामाजिक; राष्ट्रीय एकता, विश्वबंधुत्व जैसे राजनीतिक तथा ईश्वर, आत्मा जैसे दार्शनिक विषय आते हैं। विचार या चिंतन की प्रधानता होती है।
3. भावात्मक निबंध - भावना प्रधान विषयों पर लिखे गए निबंध भावात्मक निबंध कहलाते हैं, जैसे- वसंतोत्सव, चाँदनी रात, बुढ़ापा, बरसात का पहला दिन, मेरे सपनों का भारत आदि। इसमें कल्पनात्मक निबंध भी आते हैं। इस प्रकार के निबंधों में चिंतन की प्रधानता न होकर भावना की प्रधानता होती है।
4. साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध : किसी साहित्यकार, साहित्यिक विधा या साहित्यिक प्रवृत्ति पर लिखा गया निबंध साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध कहलाता है, जैसे - मुंशी प्रेमचंद, तुलसीदास, आधुनिक हिंदी कविता, छायावाद, हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग आदि। इसमें ललित निबंध भी आते हैं। इनकी भाषा काव्यात्मक और रसात्मक होती है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. निबंध लिखने से आपको क्या-क्या लाभ होते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. निबंध लिखते वक्त किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
3. निबंध के तत्वों की समीक्षा कीजिए।
4. निबंध कितने प्रकार के होते हैं? सोदाहरण परिचय दीजिए।